कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

मन श्री कुंडलियां

कमल किशोर 'कमल'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मन श्री कुण्डलियाँ

(कलम की सुगंध छंदशाला)

कमल किशोर "कमल"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-225-8
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, कमल किशोर "कमल"
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY KAMAL KISOR KAMAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

फूल कमल ज्यों खिले, फैले धरा सुगंध।
आपको सब खुशी मिले, जीवन का आबंध।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पल शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीय कमल किशोर कमल जी का एकल संग्रह **"मन श्री कुण्डलियाँ"** प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीय कमल जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीय कमल जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मकता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

अ मंदिलवार

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

शुभकामना संदेश

प्रिय कमल किशोर कमल जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह **'मन श्री कुण्डलियाँ'** विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी। और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

समीक्षा

जनपद-हमीरपुर के झलोखर ग्राम में जन्में कवि कमलकिशोर 'कमल' जी की साहित्यसेवा आखिरकार 'मन श्री कुण्डलियाँ' कुण्डलियाँ संग्रह के रूप में साकार हुई। कवि ने अपने इस प्रथम काव्य संग्रह में कुण्डलियों के माध्यम से जीवन के प्रत्येक पहलू को छूने का अदम्य साहस किया है जो कि न केवल प्रशंसनीय है अपितु देश और समाज को एक नई दिशा देने का सार्थक प्रयास है ।

कमलकिशोर 'कमल' जी सरकारी शिक्षक के साथ-2 राजनीतिक व साहित्यिक गुणों से अलंकृत हैं। 'कमल' जी को कई साहित्यिक मञ्चों द्वारा विभिन्न सम्मानों से नवाज़ा गया है। साथ ही कई मञ्चों में कविता पाठ का अनुभव इनके पास है। प्रस्तुत कुण्डलियाँ संग्रह में कवि ने वेणी, कुमकुम, काजल, पायल, कंगन, बिन्दी आदि विभिन्न शीर्षकों पर श्रृंगारिक कुण्डलियाँ रचकर अपनी इस कृति को जीवन्त कर दिया है।

वेणी शीर्षक में जहाँ एक ओर श्रृंगार झलकता है वहीं हास्य-व्यंग्य भी अछूता नहीं है-

कजरारी वेणी गुथी, लगती नागिन काल।
नागदेवता खोजती, हो हो हिया निहाल॥

कविता शीर्षक पर कवि ने परिवेश की अनुभूतियों को नित नये छन्दों में सृजित करने की बात कही है, अनुप्रास का सुन्दर प्रयोग दृष्टव्य है।

कविता कवि जीवन अहे, लिखे नये नित छन्द।
अनुभूतिक परिवेश की, होती सुखद सुगन्ध॥

चिड़ियाँ पारिस्थितिकीतन्त्र का एक अभिन्न अंग हैं। इनके संरक्षण हेतु कवि का चिन्तन/सुझाव अति सराहनीय है।

चिड़िया आँगन में रहे, दिल से करो प्रयास।
दस दाना यदि डाल दें, बन जाते हैं खास॥

कवि ने अंधविश्वास और रूढ़वादिता पर तञ्ज कसते हुए बखूबी एक जागरूक साहित्यकार का परिचय दिया है।

मुण्डन से सूदक मिटे, जल छिड़कन से छूत।
झाड़-फूँक से भग गये, मरे बड़े सब भूत॥

कहीं-२ देशज शब्दों का प्रयोग कवि की मातृभाषा प्रेम को उजागर करता है। उपवन, जीवन, बहना, पनघट, सैनिक, सबका, बाती, नारी आदि कुण्डलियाँ भी बारम्बार पढ़ने का मन होता है।

निःसन्देह कवि कमल किशोर 'कमल' जी का प्रस्तुत संग्रह शिक्षाप्रद, रोचक और मात्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु मील का पत्थर साबित होगा। पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण इस कृति से अवश्य ही लाभान्वित होंगे। मैं **'मन श्री कुण्डलियाँ'** कुण्डलियाँ संग्रह के साफल्य प्रकाशन की ईश्वर से कामना करता हूँ ।

सन्तोष कुमार प्रजापति 'माधव'
(कवि, लेखक, समीक्षक, शिक्षक)
कबरई जनपद-महोबा (उ.प्र.) मो.नं.- 9695947153

रचनाकार की कलम से....

"मन श्री कुंडलियाँ" आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्षानुभूति हो रही है जैसा कि नाम से ही विदित है कि एक शतक कुंडलियाँ कमल मन की किशोर उपज की परिणति है। उक्त कुंडलियों में जहाँ नारी के सांगोपांग रूप को शब्दों में पिरोने का प्रयास किया गया है वहीं सागर, उपवन, अंबर और जीवन जैसे विषयों पर भी कलम की स्याही ने डुबकी लगाई है। अक्षर-अक्षर ब्रह्म है की तर्ज पर यहाँ शब्द-शब्द ब्रह्म की सुंदर रसानुभूति हुई है। शब्दों का उत्ताल प्रवाह अंतर्मन को आह्लादित कर देता है। हमेशा से साहित्यानुराग की लौ मेरे सुकोमल हृदय में देदीप्यमान रही है जिसकी परिणति यह प्रथम एकल काव्य संग्रह **"मन श्री कुंडलियाँ"** आपके श्री करकमलों में समर्पित है इसके पहले दो साझा संग्रह क्रमश: "साहित्य समिधा" दीया प्रकाशन- गाजियाबाद और "आदीप्ता" ए.बी.एस. पब्लिकेशन- सारनाथ वाराणसी प्रकाशित हो चुके हैं जिसके मुख्य संपादक क्रमश: डॉ.ममता बनर्जी "मंजरी" एवं डॉ वीरेंद्र प्रताप सिंह "भ्रमर" जी हैं।

पारिवारिक पृष्ठभूमि में मेरी माता श्रीमती कौशिल्या एवं पिता श्री राजाराम प्रजापति जी एक गरीब साधारण किसान हैं जिनके सद्कर्मों ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया है और मैं जो कुछ भी हूँ उन्हीं की बदौलत हूँ। हम तीन भाई और तीन बहनें जिनमें नंदकिशोर, चंद्रप्रकाश ज्ञानदेवी, भाग्यवती और उपासना मुझसे छोटे हैं और मैं सबसे बड़ा हूँ। हम सभी भाई-बहनों में अतिशय प्यार-दुलार है। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती अंशु सदा-सर्वदा मेरे लिए संजीवनी स्वरूप हैं मेरे दो बेटे प्रखर चक्रवर्ती और शिखर चक्रवर्ती हैं जो यथा नाम तथा गुण हैं। मेरी शिक्षा-दीक्षा को आगे बढ़ाने में मेरे पिता जी का विशेष योगदान रहा क्योंकि गलती उन्हें बर्दाश्त नहीं थी और अच्छे काम पर वे मुक्तकंठ से प्रशंसा करते थे। प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा आदर्श शिशु विद्या मंदिर एव श्री राजाराम इंटर कालेज, श्री विद्या मंदिर इंटर कालेज पैतृक गाँव झलोखर-कुरारा-हमीरपुर से संपन्न हुई। स्नातकोत्तर उपाधि प्रथम श्रेणी से राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हमीरपुर एवं बी.एड.चौधरी चरण सिंह डिग्री कालेज हैवरा- इटावा व एम.एड.-अतर्रा डिग्री कालेज बाँदा से किया। शिक्षाकाल बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा क्योंकि परिवार की माली आर्थिक हालात ठीक नहीं थी। ट्युशन आदि करके अपने खर्चे चलाने पड़ते थे। खैर श्रम पर भरोसा, माता-पिता, बड़े-बुजुर्गों, गुरुओं के आशीर्वाद और दैवीय अनुकंपा से संप्रति बेसिक शिक्षा विभाग में सरकारी अध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ और साहित्यिक सेवाओं में बारहवीं कक्षा से ही अविराम लगा हुआ हूँ। वर्तमान में "अभिव्यक्ति" संस्था का प्रभारी मंत्री एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद हमीरपुर बुन्देलखण्ड उ.प्र.का जिला मीडिया प्रभारी भी हूँ।

वैसे तो मेरा शौक देशप्रेम, समाज सम्मत कविताएँ, गीत लिखने का रहा है पर हमारे बड़े भाई श्री रणवीर सिंह "अनुपम" जो वर्तमान में दूरदर्शन दिल्ली में कार्यरत हैं से छंदबद्ध रचनाओं की प्रेरणा मिली है जिसके लिए मैं उनका हमेशा आभारी रहूँगा। प्रस्तुत कुंडलियों के लिए "कलम की सुगंध- छंदशाला" की पटल प्रमुख वरिष्ठ कवयित्री, मृदुभाषिणी अनीता जी का भी बहुत बड़ा अमूल्य योगदान है जिसको भुलाया नहीं जा सकता। हम अपने सभी सहयोगी वरिष्ठ साहित्यकारों के भी ऋणी हैं जिनका समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहता है और सबसे ज्यादा तो मैं उन सभी सुधी श्रोतागणों के प्रेम का ऋणी हूँ जिनके अगाध नेहवर्षा से लेखनी को गति मिलती है।

अंत में कहना चाहता हूँ कि मन श्री कुंडलियाँ सबके मन की ही उपज है। ये देश, समाज, काल, परिस्थितियों की वाहक हैं। जहाँ एक ओर ये कुंडलियाँ कवि के प्रकृति-सुलभ मनोदशा की प्रस्फुटन हैं वहीं दूसरी ओर जीवन जीने के सहज मार्ग की प्रकटीकरण है। लय-ताल-रस अलंकार से सशक्त कुंडलियाँ आपके नेहसोम की अभिलाषी हैं। हमे आशा और पूर्ण विश्वास है कि उक्त कुंडलियाँ आप सबके सहयोग से जनमानस और हिंदी साहित्य को नई दिशा और दशा प्रदान करेंगी। इसी आशा और विश्वास के साथ आपका स्नेहिल कवि.....

कमल किशोर "कमल"
झलोखर-हमीरपुर बुन्देलखण्ड (उ.प्र.), 210505
मो.नं.-9936949972
ईमेल-kamkisor7@gmail.com.

1.

वेणी

कजरारी वेणी गुथी, लगती नागिन काल।
नाग देवता खोजती, हो-हो हिया निहाल।।
हो-हो हिया निहाल, मिलन को अँखियाँ तरसें।
ताल तलैया एक, नेह की नदियाँ बरसें।।
कहे कमल कविराज, सजन की सजना प्यारी।
हर पल रहती साथ, लिए वेणी कजरारी।।

2.

कुमकुम

कुमकुम बिंदी माथ पर, सोहे गजरा बाल।
ओंठ गुलाबी खुल गये, सजना भये निहाल।।
सजना भये निहाल, गोद में हाल उठाया।
लूट लिया श्रृंगार, सुहागन को है भाया।।
कहे कमल कविराज, जगी मदहोशी निंदी।
सजनी का सौभाग्य, सजी जो कुमकुम बिंदी।।

3.

पायल

पायल रुनझुन बज रही, चले मोरनी चाल।
गोरी मदमाती हँसे, राग बजे ले ताल।।
राग बजे ले ताल, पिया दिल धक-धक धड़के।
देख प्रेयसी माँग, खिले मन चहके-चहके।।
कहे कमल कविराज, जिया जबसे है घायल।
सच कहता हूँ यार, देखता पिय की पायल।।

4.

कंगन

कंगन बिन सूना लगे, गोरी तेरा हाथ।
बहुत चाहता हूँ प्रिये, देना मेरा साथ।।
देना मेरा साथ, कभी नाराज न होना।
करना हरदम क्षमा, सदा सहयोगी बनना।।
कहे कमल कविराज, प्यार हो जाये दूना।
चाहे जो श्रृंगार, हाथ कंगन बिन सूना।।

5.

माँ

पूजा अर्चन वंदना, करता आठों याम।
माँ के चरणों में मिले, मुझको चारो धाम।।
मुझको चारो धाम, करुं सेवा मैं हरदम।
मिलती कृपा अशेष, फैलता चहुँदिशि परचम।।
कहे कमल कविराज, नहीं दाता कोई दूजा।
झरता झर-झर सोम, करूँ मैं हरदम पूजा।।

6.

गजरा

गोरी गजरा बाल में, बाँध चली ससुराल।
पिया मिलन सपने लिए, हिया जिया खुशहाल।।
हिया जिया खुशहाल, सोंचती नभ के तारे।
हरी धरा कचनार, फूलते गेंदा न्यारे।।
कहे कमल कविराज, गाँव की अनुपम छोरी।
सुंदर लिए विचार, सोहता गजरा गोरी।।

7.

डोली

सजकर डोली चल पड़ी, नई बहू ले संग।
लाल चुनर साड़ी नई, लगा महावर रंग।।
लगा महावर रंग, संग हैं सपने प्यारे।
दिल की धड़कन तेज, सोंचकर नखरे सारे।।
कहे कमल कविराज, चलेगी हँसी ठिठोली।
घर पहुँचेगी आज, बहू की न्यारी डोली।।

8.

बिंदी

माथे बिंदी लगाकर, बहू नवेली रूप।
कंगन झुमका बोलते, अद्भुत अजब स्वरूप।।
अद्भुत अजब स्वरूप, गाल पर काला टीका।
दूर नजर की सोंच, देखिए गजब तरीका।
कहे कमल कविराज, नाम से है कालिंदी।
कर सोलह श्रृंगार, सुहागन की है बिंदी।।

9.

आँचल

माँ के आँचल में मिले, ममता का वरदान।
प्यार और पुचकार से, आ जाती है जान।।
आ जाती है जान, अंग हर सावन बरसे।
रोग-शोक सब नष्ट, हिया धक-धक कर हर्षे।।
कहे कमल कविराज, मातु में बसती है जाँ।
मिट जाती हर व्याधि, पास में रहती यदि माँ।।

10.

कजरा

गजरा-कजरा लगाकर, चली नार ससुराल।
माथे बिंदी सजाकर, पहने चुनरी लाल।।
पहने चुनरी लाल, कंठ वैजन्ती माला।
कर सोलह श्रृंगार, नज़र का टीका काला।।
कहे कमल कविराज, आगमन सजना मजरा।
कंठ नंद के लगी, दिखाकर काला कजरा।।

11.

चूड़ी

चूड़ी कंगन हाथ में, पायल रुनझुन पैर।
माथे बिंदी सोहती, गोरी चल दी सैर।।
गोरी चल दी सैर, साथ में संग सहेली।
चलती हँसी मजाक, फूल सी बहु नवेली।।
खिले कमल कविराज, देखकर गजरा जूड़ी।
चलें मोरनी चाल, पहनकर कंगन चूड़ी।।

12.

झुमका

झुमका झन-झन कान में, बोले दिन अरु रात।
कंगन चूड़ी खनकती, कहती दिल की बात।।
कहती दिल की बात, सुनो रे सुनो साँवरे।
बड़े-बड़े जज़्बात, बिछे हैं पलक पाँवड़े।।
कहे कमल कविराज, सुनो जी तक-तक तुनका।
धक-धक धड़के जिया, कान के रुनझुन झुमका।।

13.

उपवन

मन उपवन जब-जब खिले, मिलता परमानंद।
हरी भरी फूले-फले, रंग-बिरंगी कंद।।
रंग बिरंगी कंद, सुरभि तन में रस घोले।
चलती मलय बयार, जिया का मनुआ डोले।।
कहे कमल कविराज, वदन मुख पावन मधुवन।
नाँचे मनस मयूर, थिरकता है मन उपवन।।

14.

जीवन

जीवन जीना सीख लो, करो नीति के काम।
दीन दुखी सेवा करो, मिले लोक सुर धाम।।
मिले लोक सुर धाम, देवता जय-जय करते।
ब्रह्मा विष्णु महेश, फूल फल वर्षा करते।।
कहे कमल कविराज, लोकहित बने सजीवन।
महके कुंज कतार, यही है मानव जीवन।।

15.

कविता

कविता कवि जीवन अहे, लिखे नये नित छंद।
अनुभूतिक परिवेश की, होती सुखद सुगंध।।
होती सुखद सुगंध, रक्त से सींचे रचना।
मिथक बिंब अरमान, रखे है जन के सपना।।
कहे कमल कविराज, प्रवाहित है ज्यों सरिता।
अविरल उड़े फुहार, समझिए उरतल कविता।।

16.

ममता

ममता मूरत मातु को, जो सुत करे प्रणाम।
बल बुध विद्या धन मिले, फैले जग में नाम।।
फैले जग में नाम, सदा सुख नर्तन करता।
मन में हो संतोष, सदा मन निर्मल होता।।
कहे कमल कविराज, समझिए उर की सरिता।
बहे नेह रसधार, मातु की मोहिल ममता।।

17.

बाबुल

बाबुल का घर सावना, हरा भरा वन बाग।
आँखों को अच्छा लगे, लिए हिया में राग।।
लिए हिया में राग, प्रेम का सरगम बजता।
भ्रात बहन का प्यार, उरों में हरदम सजता।।
कहे कमल कविराज, घूम लो जाकर काबुल।
बिना भ्रात के बहिन, नहीं होती है बाबुल।।

18.

भैया

भैया बहना मिल करें, मातु-पिता का नाम।
काम-धाम ऐसा करो, करता जगत प्रणाम।।
करता जगत प्रणाम, तरक्की घर की होती।
मिलकर बने महान, प्रगति की छाया हँसती।।
कहे कमल कविराज, बड़ी है अपनी मैया।
करती लाड़ दुलार, बहिन का न्यारा भैया।।

19.

बहना

प्यारी बहना खुश रहे, यही चाहता भ्रात।
राजदुलारा मातु का, सियादुलारी तात।।
सियादुलारी तात, फूलती ज्यों फुलवारी।
कोमल नाजुक गाल, रूपसी है मनुहारी।।
कहे कमल कविराज, बाग की अनुपम क्यारी।
भैया रखता ख्याल, उछलती बहना प्यारी।।

20.

सखियाँ

सखियाँ अखियँन से करें, मन ही मन की बात।
समझ-समझ कर हँस रहीं, जान रही औकात।।
जान रहीं औकात, चिढ़ातीं इठलातीं हैं।
शर्म हया को छोड़, कमरिया मटकातीं हैं।।
कहे कमल कविराज, नेह की न्यारी बतियाँ।
मनभावन अंदाज, नचनियाँ अँखियाँ सखियाँ।।

21.

कुनबा

छोटे कुनबे हो गये, पति पत्नी अरु लाल।
बड़ी मुसीबत आ पड़ी, छोड़ बड़े निज हाल।।
छोड़ बड़े निज हाल, घरों में ताले पड़ते।
अच्छी बड़ी सलाह, मिलन में पाले पड़ते।।
कहे कमल कविराज, देखिए रिश्ते खोटे।
भाई मीठ न बाप, हो गये कुनबे छोटे।।

22.

पीहर

पत्नी को अच्छा लगे, अपना पीहर गाँव।
मातु पिता रहते वहाँ, मिले पीपली छाँव।।
मिले पीपली छाँव, गाँव की सोंधी माटी।
खेली लब्भो पाल, सखिन संग रातें काटी।।
कहे कमल कविराज, वहाँ से नाता सच्चा।
बचपन वाली प्रीत, लगे पत्नी को अच्छा।।

23.

पनघट

पनघट गायब हो गये, जैसे गायब शेर।
पनिहारिन दिखती नहीं, दूर-दूर हैं खेर।।
दूर-दूर हैं खेर, जहाँ पर बसती दुनियाँ।
खेत किसानी खूब, मटककर चलती पुनिया।।
कहे कमल कविराज, नलों में लगता जमघट।
पानी भरते लोग, जिसे कहते हैं पनघट।।

24.

सैनिक

भारत सैनिक वीर हैं, करते सभी सलाम।
देश सलामत चाह में, पैदा हुए कलाम।।
पैदा हुए कलाम, मिसाइल दागी हमने।
अमन चैन के गाल, दिये हैं सेना रब ने।।
कहे कमल कविराज, रक्ष करते हैं दैनिक।
वर्षा गरमी शीत, अडिग हैं भारत सैनिक।।

25.

कोयल

कोयल कागा से भली, मीठा-मीठा बोल।
बैठ कदंबी डाल पर, कुहुँक-कुहुँक रस घोल।।
कुहुँक-कुहुँक रस घोल, कर्णप्रिय सबको लागे।
सरगम बाजे खूब, मोहिनी मूरत जागे।।
कहे कमल कविराज, काँव कर कौवा भागा।
दोनों का रंग एक, बोल से कोयल कागा।।

26.

अंबर

धरती अंबर के बिना, सूना है संसार।
एक पिता सा मानिए, एक मातु सा यार।।
एक मातु सा यार, रत्न की खान यही है।
जीवन पलता यहीं, इसी में जान रही है।।
कहे कमल कविराज, मरण का सबका नंबर।
अमर रहेंगे सदा, देखिए धरती अंबर।।

27.

विनती

नमता विनती कर रही, दो ईश्वर वरदान।
काम हमारे देश हित, जनहित का हो ध्यान।।
जनहित का हो ध्यान, गरीबों की हो सेवा।
कदम बढ़े परमार्थ, खिलायें सबको मेवा।।
कहे कमल कविराज, दृष्टि में हरदम समता।
जीते हर इंसान, जोर कर कहती नमता।।

28.

भावुक

भावुक होकर रच रहे, कवि कविता के छंद।
निर्धन की चर्चा करें, शब्द सरस गुलकंद।।
शब्द सरस गुलकंद, फातिमा उसमें बसती।
हो मानवता वास, पंक्तियाँ बरबस हँसती।।
कहे कमल कविराज, बोलियाँ उठती नाजुक।
चली नेह ले द्वार, लेखनी कवि की भावुक।।

29.

अविरल

बहे सरल अविरल पवन, चले मौजिली चाल।
रखे ध्यान हर शख्स का, वन उपवन के लाल।।
वन उपवन के लाल, चमन में चहक रहे हैं।
मलय पवन हर घाट, पहुँचकर महक रहे हैं।।
कहे कमल कविराज, जिंदगी झिलमिल झिलमिल।
बसते इसमें प्रान, पवन है अविचल अविरल।।

30.

सागर

गहरा सागर बोलता, धीर बनो हमराह।
लक्ष्य भेद होगा सरल, रहे सहारा चाह।।
रहे सहारा चाह, समर्पण मन का होवे।
बीता है जो समय, उसे क्या कोई रोवे।।
कहे कमल कविराज, धैर्य का रखिए पहरा।
सफल बने इंसान, बनो सागर-सा गहरा।।

31.

अनुपम

उपवन अनुपम देखकर, आँख चले अविराम।
मानस से ठहराव की, चाह रखे विधिधाम।।
चाह रखे विधिधाम, देखना हरियाली है।
फूले कमल गुलाब, फूलती फुलवारी है।।
कहे कमल कविराज, कली का मधुरिम चितवन।
क्यारी-क्यारी खिल गई, देखकर अनुपम उपवन।

32.

धड़कन

धड़कन-धड़कन बोलती, पिया प्रेयसी प्यार।
देख-देख कर जी रहे, मिलने से इनकार।।
मिलने से इनकार, लाज-मर्यादा न्यारी।
छवि अनुपम रतिराज, रात भर करवट जारी।।
कहे कमल कविराज, जिया में तक-तक तड़कन।
रहें दूर पर पास, धड़कती धक-धक धड़कन।।

33.

वीणा

मन की वीणा बोलती, कर लो जनहित काम।
हर पल के उपयोग से, होगा जग में नाम।।
होगा जग में नाम, सितारा बनकर चमके।
दया धर्म सद्भाव, हृदय से टप-टप टपके।।
कहे कमल कविराज, हरो जन-जन की पीड़ा।
मिलता उर संतोष, बज गई मन की वीणा।।

34.

नैतिक

नैतिक मूल्यों का पतन, आदर्शी अवसान।
बैर भाव घर-घर पले, देखो सकल जहाँन।।
देखो सकल जहाँन, सपेले घर में पलते।
कर मर्यादा शमन, दुष्टता कर-कर ढलते।।
कहे कमल कविराज, ज्ञान जब मिलता दैहिक।
बढ़े स्वार्थ की बेल, मनुज ढलता है नैतिक।।

35.

विजयी

विजयी भारत कह रहा, शूरवीर की बात।
बैरी को समझा रहा, सीमा पर औकात।।
सीमा पर औकात, देश सिर ऊँचा रखता।
झंडा ऊंचा रहे, यही जय नारा कहता।।
कहे कमल कविराज, शान की बनी इमारत।
प्रहरी बने जवान, सदा हो विजयी भारत।।

36.

भारत

भारत माता कह रही, मिलकर रहना लाल।
बैर भाव सब भूलकर, बुनो प्रेम का जाल।।
बुनो प्रेम का जाल, दीन सहयोगी बनना।
दिल की है दरकार, सदा मोती ही चुनना।।
कहे कमल कविराज, ईश है सब कुछ दाता।
करना पूजा रोज, हमारी भारत माता।।

37.

छाया

छाया बनकर घूमते, खुद के अपने कर्म।
जैसा बोता आदमी, सजा दिलाती धर्म।।
सजा दिलाती धर्म, आइना बनकर दिखती।
खोया पाया मान, सभी में हँसती रहती।।
कहे कमल कविराज, भूल जा जग की माया।
भाग रहा है बहुत, भागती जाती छाया।।

38.

निर्मल

निर्मल जल का पान कर, चलो प्रभाती चाल।
रोग-शोक सब दूर हो, हे धरती के लाल।।
हे धरती के लाल, शुद्धता बहुत जरूरी।
है दूजी भगवान, चढ़ाओ पावन पूढ़ी।।
कहे कमल कविराज, जीव का जीवन परिमल।
आना जाना यहाँ, नेह का जीवन निर्मल।।

39.

धरती

धरती माता दे रहे, तरह-तरह के भोग।
मनचाहे फल-फूल ले, दूर भगाएँ रोग।।
दूर भगाएँ रोग, जगत में खुशी बिखेरो।
जड़-चेतन से प्यार, प्रकृति के पाँव पखेरो।।
कहे कमल कविराज, हँस रही देखो जगती।
मिटा दिलों के मैल, चाहती है मां धरती।।

40.

मानव

मानव ऐ सा जीव है, हँसे-खिले चहुँ ओर।
अनुभव करता रात-दिन, वही उकेरे भोर।।
वहीं उकेरे भोर, जगत को जाने समझे।
जड़-चेतन में राज, बने हैं सारे चमचे।।
कहे कमल कविराज, मनुज से हारा दानव।
गया गगन के पार, खोजता रहता मानव।।

41.

गहरा

गहरे रिश्ते आजकल, मिलें एक-दो चार।
युग मशीन का आ गया, तोड़ चले सौ बार।।
तोड़ चले सौ बार, साधना स्वारथ भारी।
किसी तरह हो काम, भले भाई महतारी।।
कहे कमल कविराज, बढ़ाते दूरी बहरे।
दर्द निवारक खोज, अभी तक गहरे-गहरे।।

42.

आँगन

चिड़ियाँ आँगन में रहें, दिल से करो प्रयास।
दस दाना यदि डाल दे, बन जाते हैं खास।।
बन जाते हैं खास, नेहवश चीं-चीं करतीं।
फुदक-फुदक कर खेल, दुआ रजकण से करतीं।।
कहे कमल कविराज, बनाकर डालो बिलियाँ।
उड़ कर आतीं पास, देखिए प्यारी चिड़ियाँ।।

43.

आधा

आधी धरती बोलती, आधा है आकाश।
आधा सूरज चाँद है, आधा करे प्रकाश।।
आधा करे प्रकाश, रोशनी आधी मिलती।
आधी धरती तिमिर, आध में बिजली होती।।
कहे कमल कविराज, जमाना उर्वर परती।
हरी-भरी के साथ, रुखाई आधी धरती।।

44.

यात्रा

जीवन यात्रा पर चले, राशन पानी बाँध।
दो हाथों से पकड़कर, वजन रखा है काँध।।
वजन रखा है काँध, सहारा लेकर तन का।
धूप-छाँव का खेल, सितारा है जन-मन का।।
कहे कमल कविराज, काम में होता यौवन।
हो भवसागर पार, हवा-सा बहता जीवन।।

45.

कोना

कोना-कोना हेम है, नियति नियम विधि संग।
होले-डोले रस भरे, चले प्रानपति चंग।।
चले प्रानपति चंग, धूप में छाया जैसी।
धर पुरवा का रूप, बरसकर हरी हितैषी।।
कहे कमल कविराज, कभी बिस्तर क्या सोना।
सर-सर फर-फर उड़े, पहुँचती कोना-कोना।।

46.

मेला

पैदा होते चल पड़ा, लेकर शक्ति अपार।
जोड़-छोड़ से बन गया, मेला का संसार।।
मेला का संसार, उसी में खेला कूदा।
कहीं किसी से प्रेम, कहीं बैरिन बेहूदा।।
कहे कमल कविराज, उड़ो सम जागृत तोते।
मलय दिशा के सुमन, खिले हैं पैदा होते।।

47.

धागा

बाँधा धागा प्रेम का, बहना ने हर बार।
दया मया बस चाहती, भाई से सौ बार।।
भाई से सौ बार, सदा हँसना ही सीखा।
सदा खुशी हो भ्रात, हँसाना हरदम सीखा।।
कहे कमल कविराज, चाहिए भारत काँधा।
रहे निडर हर वक्त, प्रेम का धागा बाँधा।।

48.

बिखरी

बिखरी बाली खेत में, पड़ी हुई हर ओर।
कोई आकर बीन ले, उठकर ताजी भोर।।
उठकर ताजी भोर, धूप में उमस सताती।
शीतल छाया चाह, हँसी का सुमन खिलाती।।
कहे कमल कविराज, बीनिए भाई सिकरी।
बहुत पड़ी है खेत, देखिए बाली बिखरी।।

49.

गलती

गलती करके सीख ले, समाधान का ज्ञान।
प्रश्नों के उत्तर मिले, प्राणी बने महान।।
प्राणी बने महान, निखरता है पल प्रतिपल।
कर्म चाल हो तेज, प्राप्त हो मनमोहक फल।।
कहे कमल कविराज, दिवारें रोधक ढलतीं।
उड़े हवाई चाल, खुशी दे अव्वल गलती।।

50.

बदला

बदले-बदले रूप से, भारत जन हैरान।
युद्ध आदि को छोड़कर, रखिए सीमा मान।।
रखिए सीमा मान, पाक ने बात कही है।
भारत को विश्वास, बतायें कौन सही है।।
कहे कमल कविराज, शत्रु की पढ़ चल शकलें।
कब बन जाये नाग, पलटकर तेवर बदले।।

51.

दुनिया

पुनिया दुनिया में रहे, पौध लगाओ खूब।
शुद्ध हवा मिलती रहे, हरी-भरी हो दूब।।
हरी-भरी हो दूब, फूल फुलवारी फूले।
रसधर फल की माँग, बाग की कलियाँ झूले।।
कहे कमल कविराज, खुशी से डोले सुनिया।
रंग-बिरंगे भाव, लिए दुनिया में पुनिया।।

52.

तपती

तपती धरती खोलती, उरतल के उद्‌गार।
सारा दिन जलती रही, लेकर जग का भार।।
लेकर जग का भार, रात भर जगती रहती।
सोमपान की मार, भोर में उठकर सहती।।
कहे कमल कविराज, कभी हो जाती परती।
वर्षा की दरकार, हरी हो तपती धरती।।

53.

मेरा

मेरा तन अर्पित सदा, देशप्रेम के नाम।
सेवा में मेवा मिले, कर-कर जनहित काम।।
कर-कर जनहित काम, मनस संतोषी बनता।
अपनेपन का भाव, सदा जेहन में रहता।।
कहे कमल कविराज, जा रहे डेरा-डेरा।
दूर करें तकलीफ, ध्येय हो तेरा-मेरा।।

54.

सबका

सबका मालिक एक है, करते काम अनेक।
एक धरा की सेज है, हवा नीर रब एक।।
हवा नीर रब एक, दृष्टि रख एक समाना।
नेह गेह संवाद, भाव में हरदम गाना।।
कहे कमल कविराज, सोच रखना है अब का।
खुशी मिले हर जीव, ध्यान रखना है सबका।।

55.

आगे

आगे-आगे चल पड़े, लिए तिरंगा तान।
झंडा ऊंचा बोलते, सुर लय में है गान।।
सुर लय में है गान, हिया में जज्बा जागा।
देशप्रेम के नाम, बुना है सुंदर धागा।।
कहे कमल कविराज, सूत का चरखा तागें।
चल गाँधी के मार्ग, रखें सच्चाई आगें।।

56.

मौसम

बेमौसम बरसात से, फसल हुई बरबाद।
कृषकों के चूल्हे बुझे, कौन करे संवाद।।
कौन करे संवाद, तसल्ली दिल से दे दे।
बड़ी समस्या भाँप, जरूरत झोला भर दे।।
कमल कविराज कहे, मदद कर इमदादों से।
हो नुकसानी भान, बेमौसम बरसात से।।

57.

दौर

जाना था हरिभजन को, ओटन लगी कपास।
दुनिया ऐसी बाँवली, चरा रही है घास।।
चरा रही है घास, गुफ़ा में शेर विराजे।
गधा बजायें बीन, अश्व तक धिन-धिन नाँचे।।
कहे कमल कविराज, पार कब भ्रम से पाना।
अफवाहों का दौर, धरा पर आकर जाना।।

58.

करना

करना जनहित काम है, लेकर हरि का नाम।
सेवा-सेवा जप करे, सुबह दोपहर शाम।।
सुबह दोपहर शाम, इसी से जीवन सजता।
आत्मा करे पुकार, प्रेमवश बाजा बजता।।
कहे कमल कविराज, रिक्तियाँ हरदम भरना।
एक एक हों चार, यहीं मिल जुलकर करना।।

59.

दीपक

दीपक बाती तेल से, रोशन हो घर द्वार।
दबा पूँछ भागे तिमिर, बढ़े मेल अरु प्यार।।
बढ़े मेल अरु प्यार, सभी में भाईचारा।
मन में हो उल्लास, गूँजता बम-बम नारा।।
कहे कमल कविराज, किलकते देखो नाती।
मिलती खुशी अपार, प्रकाशित दीपक बाती।।

60.

पूजा

पूजा करते रात दिन, जपते प्रभु का नाम।
स्वारथ का चश्मा लगा, फिरते आठो याम।।
फिरते आठो याम, जेबकतरे हैं सारे।
चले तिलक के साथ, हितैषी बनते तारे।।
कहे कमल कविराज, काटते ज्यों खरबूजा।
एक हाथ में छुरी, दूसरे में भ्रम पूजा।।

61.

थाली

थाली व्यंजन से भरी, यही कहे सौ बार।
दो रोटी हों प्रेम की, हो जाता त्योहार।।
हो जाता त्योहार, भूख क्षण भर में मिटती।
आती तृप्त डकार, खुशी का सरगम जपती।।
कहे कमल कविराज, बाग का जैसा माली।
सींचे हरदम प्यार, चाहती हरदम थाली।।

62.

बाती

बाती से बाती करे, तेल दीप का संग।
तीनों जबसे मिल गये, भागा तिमिर कुरंग।।
भागा तिमिर कुरंग, ज्योति का खुला पिटारा।
जगमग हो घर द्वार, यही हम सबका नारा।।
कहे कमल कविराज, खुशी सब बाबा नाती।
खुलकर करते काम, रोशनी भरती बाती।।

63.

आशा

आशा अरु विश्वास से, जीती जाती जंग।
उसी दिशा में श्रम चले, उसी दिशा हर अंग।।
उसी दिशा हर अंग, लक्ष्य सब छोटे लगते।
ऊर्जा रहे अपार, सफलता के पर लगते।।
कहे कमल कविराज, काम की यह परिभाषा।
ले जुनून में ताज, बड़ी है तुझपे आशा।।

64.

उड़ान

मन मयूर भरने लगा, ऊँची बड़ी उड़ान।
दूर वहाँ जाना अभी, होता खत्म जहाँन।।
होता खत्म जहाँन, कामना भाग चली है।
पूरा है विश्वास, जीतना फली कली है।।
कहे कमल कविराज, नाँचता है देशी तन।
पूरे हों अरमान, चाहता है न्यारा मन।।

65.

आशा

आशा तन श्वाँसा लगी, चली खोजने कंत।
मन उड़ान तब तक भरी, जब तक हुआ न अंत।।
जब तक हुआ न अंत, डोर प्रियतम की बाँधे।
समझ न आया भार, धरा है कितना काँधे।।
कहे कमल कविराज, पराजित रही निराशा।
मिलती जाती जीत, रही जब तक मन आशा।।

66.

उड़ना

उड़ना मन पंछी सदा, जहाँ गगन की राह।
जब तक मंजिल दूर है, तब तक लेना थाह।।
तब तक लेना थाह, नापना दूरी सधकर।
उड़ते रहना रोज, जोश से दामन भरकर।।
कहे कमल कविराज, सभी बाधा से लड़ना।
संघर्षों में जीत, पंख फैलाकर उड़ना।।

67.

खिलना

खिलना है आकाश तक, ऐसी चर नर सोच।
उसी जोश से उड़ रहा, समझ जटिलता लोच।।
समझ जटिलता लोच, प्रबंधन वैसा करता।
करता प्रकृति निवेश, लगाता वैसा पैसा।।
कहे कमल कविराज, रिक्तियाँ सारी भरना।
श्रम से कहाँ गुरेज, चरों को नभ तक खिलना।।

68.

होली

होली भोली खेलती, सखी सहेली संग।
उछल-कूद ऐसी करे, जैसे पी हो भंग।।
जैसे पी हो भंग, पिता को पिता न समझे।
हँसे ठहाका मार, केश सब उलझे उलझे।।
कहे कमल कविराज, चली हुड़दंगी टोली।
लगते जीजा सार, खेलती भोली होली।।

69.

साजन

साजन के घर जा रही, जनक दुलारी आज।
ढोल नगाड़े बज रहे, तरह-तरह स्वर साज।।
तरह-तरह स्वर साज, नाँचते ढोल बराती।
चमक रहे घर द्वार, चमकती झालर बाती।।
कहे कमल कविराज, खड़े हैं द्वारे राजन।
तिलक लगाते भ्रात, आ गये बहना साजन।।

70.

सजनी

सजनी सजना से कहे, चलो झील के तीर।
भीतर की गरमी मिटे, झर-झर शीतल नीर।।
झर-झर शीतल नीर, प्रीत की बहे बयारें।
मन में उठे फुहार, कामिनी कंचन हारे।।
कहे कमल कविराज, चाँदनी चंदा रजनी।
संग सहेली बने, मिलन की बारी सजनी।।

71.

डोरी

डोरी भैया प्रेम की, सदा राखिए साथ।
बहना के ऊपर रहे, बड़े भाई का हाथ।।
बड़े भाई का हाथ, सदा वरदानी रहता।
सुख का होता वास, दुखों का प्रस्तर ढहता।।
कहे कमल कविराज, कि बंधन सच्चा जोरी।
निडर बढ़ी विरान, सुरक्षा करती डोरी।।

72.

बोली

बोली गोली से बढ़ी, जो दिल करती घाव।
सरल सहजता बोलिए, बिना दिखाये ताव।।
बिना दिखाये ताव, बोलिए मीठा-मीठा।
झलके प्रेम दुलार, नहा लेकर सतरीठा।।
कहे कमल कविराज, चलेगी संग-संग टोली।
अपनापन का राग, गा रही प्यारी बोली।।

73.

यादें

जीवन के इतिहास में, यादें रहतीं शेष।
कैसे-कैसे लोग थे, कैसे-कैसे भेष।।
कैसे-कैसे भेष, भावना कैसी रखते।
कैसा था परिवेश, कामना कैसी रखते।।
कहे कमल कविराज, खोजते हैं संजीवन।
अपना-अपना छोड़, याद कर जीते जीवन।।

74.

छोटी

छोटी-छोटी भूल जब, बन जाती नासूर।
जीना हो जाता दुखद, मानस लिए फितूर।।
मानस लिए फितूर, लक्ष्य से दूरी बढ़ती।
श्रम पूंजी बेकार, सफलता सीढ़ी ढलती।।
कहे कमल कविराज, देखकर चलना गोटी।
हार जीत के बीच, जीतना है बस छोटी।।

75.

मीठा

मीठा खाकर चल दिए, रोजगार के हेतु।
शहर-नहर गाँवन-गली, पार किया नद सेतु।।
पार किया नद सेतु, परीक्षा देखो जारी।
पास-फेल का दौर, कर रहा मन को भारी।।
कहे कमल कविराज, खुशी होगी बन चाकर।
एक आश-विश्वास, नौकरी मीठा खाकर।।

76.

बातें

बातें रस से डूबकर, देती अजब मिठास।
अपनापन का भाव ले, रखती दूर खटास।।
रखती दूर खटास, नेह का सागर बहता।
द्वेष भाव से दूर, अमन का सावन रहता।।
कहे कमल कविराज, उजाले वाली रातें।
खुशियाँ हो हर ओर, करो मनुहारी बातें।।

77.

चमका

चमका भाग्योदय पटल, उदित सफलता ताज।
मन में लड्डू फूटते, हँसते उर अल्फाज।।
हँसते उर अल्फाज, खुशी से चला दीवाना।
करता सबसे प्यारा, कहे दिल नहीं दुखाना।।
कहे कमल कविराज, धरा छूने की लपका।
रज माथे पर तिलक, भुवन में भूपति चमका।।

78.

गीता

गीता पढ़ ज्ञानी बने, बड़े-बड़े विद्वान।
कर्म-धर्म में रत रहे, पाते जन सम्मान।।
पाते जन सम्मान, मान वे सबका रखते।
नेहिल बगिया सींच, फूल की क्यारी बनते।।
कहे कमल कविराज, बनो तुम सबके मीता।
सबका हो सहयोग, कहे निष्कामी गीता।।

79.

सहना

सहना पड़ता जगत में, धूप छाँव बरसात।
कभी शोक से दिल दुखे, कभी खुशी की रात।।
कभी खुशी की रात, कि जीवन पवन समाना।
खंदक खाई नाल, नदी पर बहते जाना।।
कहे कमल कविराज, यही संतों का कहना।
कितना भी दुख रहे, मगर चुपके से सहना।।

80.

वंदन

वंदन करता भोर उठ, तात मात बड़भ्रात।
उनके आशीर्वाद से, चंगा रहता गात।।
चंगा रहता गात, दर्द सारे मिट जाते।
मिलती खुशी अपार, हास रस हँसकर आते।।
कहे कमल कविराज, बड़ों का रज कण चंदन।
धन बल विद्या बढ़े, चलो रे करिये वंदन।।

81.

आसन

योगी आसन बैठकर, जपता हरि का नाम।
ममता माया मोह से, दूर रहे बलराम।।
दूर रहे बलराम, तपस्या करता भारी।
मंगलकारी सोच, बनी सबकी हितकारी।।
कहे कमल कविराज, हमेशा रहे निरोगी।
संत साधुता भाव, लिए आसन पर योगी।।

82.

आतुर

मन आतुर चिंतन करे, सहज सुखद परिणाम।
तन धन वच से कर रहा, अथक श्रमिक बन काम।।
अथक श्रमिक बन काम, जीतने की लिप्सा है।
उर आशा विश्वास, बने सच्चा किस्सा है।।
कहे कमल कविराज, भागता है जीवन जन।
आगे की है दौड़, चाहता है आतुर मन।।

83.

आभा

आभा प्यारी जगत की, इस पर दिल कुर्बान।
फूलों की घाटी हँसे, पूरे हर अरमान।।
पूरे हर अरमान, प्रकृति की छटा निराली।
हरी-भरी है घास, हरी हर क्यारी-क्यारी।।
कहे कमल कविराज, दिखाती है दिलदारी।
नदी नहर तालाब, सभी की आभा प्यारी।।

84.

चितवन

चित चितवन जिस ओर है, होता सुंदर भोर।
प्रथम रश्मि आभा लिए, कर देती है शोर।।
कर देती है शोर, हवा मस्तानी चलती।
खिलते कमल गुलाब, मौसमी खुशबू उड़ती।।
कहे कमल कविराज, खिले जन मानस उपवन।
खुशियाँ मिले अपार, यही चाहे चितवन।।

85.

कोमल

कोमल कलियों में सुमन, हँसता खिलता खूब।
भ्रमर देख मोहित हुआ, बन बैठा महबूब।।
बन बैठा महबूब, आलिंगन करता जी भर।
तन रस चूसे डूब, मसखरी डटकर।।
कहे कमल कविराज, गटकता कोपल-कोपल।
ऐसा है रसराज, चाहता है रस कोमल।।

86.

मोहक

मोहक मोदक गजब के, खाते जन गण मान।
पर्व बड़ा ही खास है, गाते जन गण गान।।
गाते जन गण गान, देश की जनता प्यारी।
झंडा ऊंचा रहे, इसी पर तन मन वारी।।
कहे कमल कविराज, बड़ा है मौसम रोचक।
मन में है अनुराग, झाकियाँ हैं मनमोहक।।

87.

शीतल

शीतल पानी नदी का, बहता रहता रोज।
संदेशा देता यही, रुकना नहीं फिरोज।।
रुकना नहीं सरोज, सदा खिलते ही रहना।
आँधी हो तुफान, सदा ही बढ़ते रहना।।
कहे कमल कविराज, जनों की सही कहानी।
चलना केवल काम, बहे ज्यों शीतल पानी।।

88.

हारा

अपनों से हारे सभी, बाँध गाँठ में यार।
सेवा करते रहो बस, करते यही पुकार।।
करते यही पुकार, अपेक्षा बढ़ती जाती।
सेवा में यदि देर, कदर भी घटती जाती।।
कहे कमल कविराज, हमारे सुखद सितारे।
बिछे दुखों के तार, सभी अपनों से हारे।।

89.

जीता

जीता जाता नेह से, भरा बड़ा संसार।
उत्तम भावों से चले, प्यारा सा परिवार।।
प्यारा-सा परिवार, खुशी के गुलशन खिलते।
लेकर मलय बयार, हरे सब पौधे हिलते।।
कहे कमल कविराज, यही कहती है गीता।
हितकारी कर काम, राज होता उर जीता।।

90.

नारी

नारी देवी-सी जगत में, प्रकृति पुष्प का रूप।
फूल-फूलकर फल बने, देती सजग स्वरूप।।
देती सजग स्वरूप, लाल बन पलना झूले।
पालन पोषण करे, शक्तिशाली नभ छू ले।।
कहे कमल कविराज, पुरुष से नारी भारी।
हरी-भरी हो धरा, चाहती माता नारी।।

91.

साहस

धीरज साहस से मिले, धरती के नवरत्न।
चौदह भी जीते गए, कर सागर में यत्न।।
कर सागर में यत्न, गगन में उड़ते बादल।
मोड़ दिया रुख हवा, लगाया टीका काजल।।
कहे कमल कविराज, बने प्रस्तर भी पारस।
मन से भरे उड़ान, पहुँचते चंदा साहस।।

92.

नटखट

नटखट बच्चा खेलता, आँगन के चहुँ ओर।
कभी फुदकता कूदता, होती संझा भोर।।
होती संझा भोर, हँसे किलकारी मारे।
बाल सुलभ हर कर्म, खिले हैं चंदा तारे।।
कहे कमल कविराज, उठा वह अटपट झटपट।
सहज सरल स्वभाव, खेलता फिरता नटखट।।

93.

अंकुश

अंकुश वाणी में रहे, श्रवण करो शुभ खूब।
सच मानो सब प्रिय हुए, अद्भुत अजब अनूप।।
अद्भुत अजब अनूप, नेह की वर्षा होती।
आता आतम भाव, नीर की गगरी भरती।।
कहे कमल कविराज, कभी न बनो निरंकुश।
अपनेपन का भाव, रखो वाणी में अंकुश।।

94.

चंदन

चंदन जैसे धैर्य से, जीता अर्जुन वीर।
लक्ष्य भेद के भाव से, वही बाण रणतीर।।
वही बाण रणतीर, निशाना अलबेला है।
जैसा चाहे मार, कला कौशल खेला है।।
कहे कमल कविराज, वीर को करते वंदन।
पीठ वार से दूर, भाल माथे है चंदन।।

95.

थोड़ा

थोड़ा-थोड़ा हम बढ़े, थोड़ा-थोड़ा आप।
प्रेम डगर चलते रहे, किया न कोई पाप।।
किया न कोई पाप, नेह का झूला झूला।
भूल गए हर काम, चमन उपवन सब फूला।।
कहे कमल कविराज, दौड़ता नेहिल घोड़ा।
जुड़े दिलों के तार, मिले जब थोड़ा-थोड़ा।।

96.

पूरा

पूरा भारत देश है, अजब-गजब संसार।
जाति-धर्म में है बटा, भावों से परिवार।।
भावों से परिवार, सभी की माता भारत।
करती लाड़ दुलार, सभी पर ममता वारत।।
कहे कमल कविराज, भुवन का मिशन अधूरा।
भारत का हर लाल, करेगा इसको पूरा।।

97.

सपना

सपना देखें रात-दिन, करें न एको काम।
मुफ्त लुफ्त में नजर है, कोई दे आ दाम।।
कोई दे आ दाम, आलसी द्वारे-द्वारे।
माँग रहे हैं भीख, मिलेंगे मठ चौपारे।।
कहे कमल कविराज, भोर से माला जपना।
खाना-पीना काम, यही है इनका सपना।।

98.

प्रेम

बरबस दिल से फूटता, प्रेम मीत फव्वार।
भीतर-बाहर नाँचता, हर हरिहर संसार।।
हर हरिहर संसार, खेत मधुवन बन जाते।
फूले सरस पलास, हरे वन सावन गाते।।
कहे कमल कविराज, मौज के न्यारे तरकस।
होता सुखद समाज, प्यार होता जब बरबस।।

99.

सबका

सबका मालिक एक है, पूजा राम रहीम।
कट्टरता से शत्रुता, छोड़ो दास फहीम।।
छोड़ो दास फहीम, प्रकृति से नाता जोड़ो।
कल की चिंता छोड़, आज ही हँस लो जी लो।।
कहे कमल कविराज, दिलों में हो हर तबका।
छोड़ो नफरत यार, यही कहता रब सबका।।

100.

मुंडन

मुंडन से शूदक मिटे, जल छिड़कन से छूत।
झाड़-फूँक से भग गये, मरे बड़े सब भूत।।
मरे बड़े सब भूत, धार दारू की पीते।
लौंग बताशा धूप, चार अंडे खा जाते।।
कहे कमल कविराज, ढोंग का कर दो खंडन।
दलित समझते लोग, कराते-फिरते मुंडन।।
(अंधविश्वास पर....)

कवि-कमल किशोर "कमल"
हमीरपुर बुन्देलखण्ड।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **कमल किशोर 'कमल'**
माताजी- श्रीमती कौशिल्या
पिताजी- श्री राजाराम
जन्मतिथि- १३.०१.१९८०
स्थायी पता- ०७/२३०, अमन शहीद हमीरपुर (उत्तर प्रदेश), पिन कोड- २१०३०१
अस्थायी पता- ग्राम पोस्ट-झलोखर, जिला- हमीरपुर(उत्तर प्रदेश) पिन कोड-२१०५०५.
शिक्षा- एम ए(हिंदी),एम एड,पी जी डी टी.
प्रकाशन- साहित्य समिधा साझा संग्रह,आदीप्ता साझा संग्रह।
प्रकाशनाधीन- इक्कीसवीं सदी के चुनिंदा दोहाकार साझा संग्रह,दिल के अल्फाज साझा संग्रह।
लेखन विधा- दोहा, कुंडलियॉ,गीत,अहचलिक गीत, निबंध एवं कहानी आदि।
सम्मान- कई मंचों में कविता पाठ किया जिसमें प्रशस्ति पत्र से सम्मानित हुए एवं अब तक लगभग दश संस्थाओं द्वारा प्रशस्ति पत्रों के माध्यम से सम्मान। कई पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।
व्यवसाय- सरकारी बेसिक शिक्षक
मोबाइल- 9936949972, 9452598492
ईमेल- kamkisor7@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-225-8
मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/